

श्री महावीर पूजन

(डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल कृत)

(स्थापना)

जो मोह माया मान मत्सर, मदन मर्दन वीर हैं।
जो विपुल विघ्नों बीच में भी, ध्यान धारण धीर हैं॥
जो तरण-तारण भव-निवारण, भव-जलधि के तीर हैं।
वे चन्दनीय जिनेश, तीर्थकर स्वयं महावीर हैं॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

जिनके गुणों का स्तवन पावन करन अम्लान है।
मल-हरन निर्मल-करन भागीरथी नीर-समान है॥
संतप्त-मानस शान्त हों जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लिपटे रहें विषधर तदपि-चन्दन विटप निर्विष रहें।

त्यों शान्त शीतल ही रहो रिपु विघन कितने ही करें॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-ज्ञान-दर्शन-वीर जिन अक्षत समान अखण्ड हैं।

हैं शान्त यद्यपि तदपि जो दिनकर समान प्रचण्ड हैं॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवनजयी अविजित कुसुमसर सुभट मारन सूर हैं।

पर-गन्ध से विरहित तदपि निज-गन्ध से भरपूर हैं॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यदि भूख हो तो विविध व्यंजन मिष्ट इष्ट प्रतीत हों।

तुम क्षुधा-बाधा रहित जिन! क्यों तुम्हें उनसे प्रीत हो?॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगपद् विशद् सकलार्थ झलकें नित्य केवलज्ञान में।
 त्रैलोक्य-दीपक वीर-जिन दीपक चढ़ाऊँ क्या तुम्हें॥
 संतप्त-मानस शान्त हों जिनके गुणों के गान में।
 वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में॥
 ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
 जो कर्म ईंधन दहन पावक पुंज पवन समान हैं।
 जो हैं अमेय प्रमेय पूरण ज्ञेय ज्ञाता ज्ञान हैं॥सन्तप्त॥
 ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
 सारा जगत फल भोगता नित पुण्य एवं पाप का।
 सब त्याग समरस निरत जिनवर सफल जीवन आपका॥सन्तप्त॥
 ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
 इस अर्घ्य का क्या मूल्य है अनर्घ्य पद के सामने।
 उस परम-पद को पा लिया हे पतितपावन! आपने॥सन्तप्त॥
 ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

सित छठवीं आषाढ़, माँ त्रिशला के गर्भ में।
 अन्तिम गर्भावास, यही जान प्रणमूँ प्रभो॥
 ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं
 निर्वपामीति स्वाहा।
 तेरस दिन सित चैत, अन्तिम जन्म लियो प्रभू।
 नृप सिद्धार्थ निकेत, इन्द्र आय उत्सव कियो॥
 ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं
 निर्वपामीति स्वाहा।
 दशमी मगसिर कृष्ण, वर्द्धमान दीक्षा धरी।
 कर्म कालिमा नष्ट, करने आत्मरथी बने॥
 ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं
 निर्वपामीति स्वाहा।

सित दशमी बैसाख, पायो केवलज्ञान जिन ।

अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य, प्रभुपद पूजा करें हम ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

कार्तिक मावस श्याम, पायो प्रभु निर्वाण तुम ।

पावा तीरथधाम, दीपावली मनाय हम ॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

यद्यपि युद्ध नहीं कियो, नाहिं रखे असि-तीर ।

परम अहिंसक आचरण, तदपि बने महावीर ॥

(पद्वारि)

हे मोह-महादलदलन वीर, दुद्धर-तप संयम धरण धीर ।

तुम हो अनन्त आनन्दकन्द, तुम रहित सर्व जग दंद-फंद ॥

अघकरन करन-मन-हरन-हार, सुखकरन हरन भवदुख अपार ।

सिद्धार्थ तनय तनरहित देव, सुर-नर-किन्नर सब करत सेव ॥

मतिज्ञान रहित सन्मति जिनेश, तुम राग-द्वेष जीते अशेष ।

शुभ-अशुभ राग की आग त्याग, हो गये स्वयं तुम वीतराग ॥

षट् द्रव्य और उनके विशेष, तुम जानत हो प्रभुवर अशेष ।

सर्वज्ञ-वीतरागी जिनेश, जो तुम को पहचाने विशेष ॥

वे पहचानें अपना स्वभाव, वे करें मोह-रिपु का अभाव ।

वे प्रकट करें निज-पर विवेक, वे ध्यावें निज शुद्धात्म एक ॥

निज आत्म में ही रहें लीन, चारित्र-मोह को करें क्षीण ।

उनका हो जाये क्षीण राग, वे भी हो जायें वीतराग ॥

जो हुए आज तक अरीहंत, सबने अपनाया यही पंथ ।

उपदेश दिया इस ही प्रकार, हो सबको मेरा नमस्कार ॥

जो तुमको नहिं जाने जिनेश, वे पायें भव-भव-भ्रमण क्लेश ।
 वे माँगें तुमसे धन-समाज, वैभव पुत्रादिक राज-काज ॥
 जिनको तुम त्यागे तुच्छ जान, वे उन्हें मानते हैं महान ।
 उनमें ही निशदिन रहें लीन, वे पुण्य-पाप में ही प्रवीन ॥
 प्रभु पुण्य-पाप से पार आप, बिन पहिचाने पायें संताप ।
 संतापहरण सुखकरण सार, शुद्धात्मस्वरूपी समयसार ॥
 तुम समयसार हम समयसार, सम्पूर्ण आत्मा समयसार ।
 जो पहचानें अपना स्वरूप, वे हो जायें परमात्मरूप ॥
 उनको ना कोई रहे चाह, वे अपना लेवें मोक्ष राह ।
 वे करें आत्मा को प्रसिद्ध, वे अल्पकाल में होय सिद्ध ॥
 ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

भूतकाल प्रभु आपका, वह मेरा वर्तमान ।
 वर्तमान जो आपका, वह भविष्य मम जान ॥
 (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

जिन-प्रतिमा जिनवर-सी कहिए ।

भविक तुम वन्दहु मनधर भाव, जिन-प्रतिमा जिनवर-सी कहिए ।
 जाके दरस परम पद प्रापति, अरु अनंत शिव-सुख लहिए ॥जिन.॥
 निज-स्वभाव निरमल है निरखत, करम सकल अरि घट दहिये ।
 सिद्ध-समान प्रकट इह थानक, निरख-निरख छवि उर गहिए ॥जिन.॥
 अष्ट कर्म-दल भंज प्रकट भई, चिन्मूर्ति मनु बन रहिये ।
 जाके दरस परम पद प्रापति, अरु अनंत शिव-सुख लहिए ॥जिन.॥
 त्रिभुवन माहिं अकृत्रिम-कृत्रिम, वंदन नित-प्रति निरवहिये ।
 महा-पुण्य संयोग मिलत है, 'भैया' जिन प्रतिमा सरदहिये ॥जिन.॥